Dr. Dhananjay Kumar
Assistant Professor
S.R.A.P college
Course — BA II

• चन्द्रगुप्त II का अभिलेख

① महरौली लौह स्तंभ लेख।

• प्राप्ति स्थल : महरौली (दिल्ली) माना जाता है कि यह मूलतः स्तंभ महरौली गाँव में स्थापित नहीं किया गया था। यह किसी विष्णुपदगिरी जगह पर स्थापित किया गया था यह विष्णुपदगिरी कहाँ है यह ढूंढने का प्रयास इतिहासकार करते हैं कुछ का मानना है कि यह हरिद्वार में है कुछ का मानना है कि मथुरा में है कुछ का मानना है कि अम्बाला के सिबौरी गाँव में है। पहले यह स्तंभ वहीं लगाया गया होगा बाद में इसे महरौली में स्थानांतरित किया गया है।

– दिल्ली के तोमर वंश के शासक अनंगपाल ने इसे कुतुबमिनार के आस-पास महरौली में स्थापित करवाया। यह स्तंभ 7.16 m लम्बा है। इसके शीर्ष पर उल्टे कमल की आकृति है

तथा शीर्ष पर गरुड़ की आकृति है। इस स्तंभ पर चन्द्र लिखा हुआ है।

- भाषा – संस्कृत
- लिपि – गुप्त ब्राह्मी
- तिथि का लेख : कोई तिथि दर्ज नहीं। चूंकि यह लेख साबित हुए हो चुका है कि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का है और इसका कालखंड 380–415 तक है अतः यह लेख 380–415 AD के बीच का होगा।

- लेख का महत्व :- यह Iron Pillar inscription है। इससे पहले इतिहास में कभी भी Iron Pillar का प्रमाण नहीं मिला है। यह गुप्त काल के Iron technology का सबसे बेहतरीन नमूना है। गुप्त काल में लोहे को चमकाने की कला अपने चरम पर पहुँच गई थी

– यह Pillar 1600 से अधिक साल हो गया है लेकिन इसपर अभी तक जंग नहीं लगा है जो गुप्तकाल को स्वर्णयुग तक पहुँचाने

मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

— गुप्तकाल मे इसप्रकार के Iron pillar बनाने के chemical process की कहीं भी चर्चा नही करके गुप्तो ने आने वाले युग के लिए काफी रहस्यात्मक पहुँचाया है। इस बिन्दु पर इसकी काफी आलोचना होती है।

→ महरौली लौह स्तंभ की महत्ता यह है कि इसमे चन्द्रगुप्त II विक्रमादित्य के द्वारा सिंधु और बाह्लीक, गुजरात क्षेत्र पर विजय की जानकारी मिलती है।

— प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से पता चलता है कि समुद्रगुप्त ने लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारत को विजित कर लिया था। केवल उसके विस्तार क्षेत्र से गुजरात सिंधु बाह्लीक और उत्तर पश्चिम के कुछ क्षेत्र बच गए थे। यह काम समुद्रगुप्त के उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त II ने कर दिया।

Note:-

— चन्द्रगुप्त II ने शक और ____ को इतिहास से मिटा दिया था। यह जानकारी महरौली लौह स्तंभ से नहीं मिलती है। यह जानकारी मुख्य रूप से सिक्के और साहित्य से मिलती है। इसी विजय के उपलक्ष्य में उन्होंने चाँदी का सरकारी सिक्का चलाए थे।

— चन्द्रगुप्त II ने बचे हुए देवपुत्र शाहानुशाही (कुषाण) को मिटाकर सिंध और वाह्लीक क्षेत्र जीत लिए। वाह्लीक क्षेत्र के बारे में कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त II ने सिंधु नदी के सात मुहानों को पारकर इस क्षेत्र को जीता था।

— महरौली लेख में यह भी दर्ज है कि जब गुप्तों का साम्राज्य विस्तार चरम पर पहुंच गया ~~तब~~ उसके तमाम आंतरिक विरोधी चुनौती देने की कोशिश करने लगे। उनकी कोशिश बंगाल में सामने आई। लेख में यह चर्चा नहीं है कि विरोधी कौन था। लेकिन विरोधियों ने संयुक्त मोर्चा बना लिया था कि इसको